17. बिना जड़ का पेड़

राजा के दरबार में एक व्यापारी संदूक के साथ पहुँचा। उसने गर्व से कहा, "महाराज, मैं व्यापारी हूँ और बिना बीज एवं पानी के पेड़ लगाता हूँ। आपके लिए मैं एक अद्‌भुत उपहार लाया हूँ। आपके दरबार में एक-से-एक ज्ञानी-ध्यानी हैं। इसलिए पहले मुझे कोई यह बताए कि इस संदूक में क्या है। अगर बता देगा तो आपके यहाँ चाकरी करने को तैयार हूँ।"

सभासद पंडितों, पुरोहितों और ज्योतिषियों की ओर देखने लगे, लेकिन उन लोगों ने सिर झुका लिए।

सभा में गोनू झा भी उपस्थित थे। उन्हें उसकी चुनौती स्वीकार करना आवश्यक लगा अन्यथा दरबार की जग-हँसाई होती। गोनू झा ने विश्वासपूर्वक कहा, "मैं बता सकता हूँ कि संदूक में क्या है, लेकिन इसके लिए मुझे रात भर का समय चाहिए और व्यापारी को संदूक के साथ मेरे यहाँ ठहरना होगा। संदूक बदला न जाए, इसकी निगरानी के लिए हम रातभर जगे रहेंगे और व्यापारी चाहे तो पहरेदार भी रखवा सकते हैं।" सभा मान गए और व्यापारी गोनू झा के यहाँ चला गया।

रातभर दोनों संदूक की रखवाली करते रहे। गप्प काटनी थी, इसलिए किस्सा-कहानी भी चलती रही। बातचीत के क्रम में गोनू झा ने कहा, "भाई, कुछ दिन पूर्व मुझे एक

व्यापारी मिला था, उसने भी यही कहा था कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगाता हूँ। पेड़ों में भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, वह भी रात में। क्या आप भी रात में पेड़ उगाकर भाँति-भाँति के फूल खिला सकते हैं?"

उसने अहंकार से कहा, "क्यों नहीं! गोरे पेड़ रात में ही अच्छे लगते हैं और उनके रंग-बिरंगे फूल देखते ही बनते हैं।" यह सुनते ही गोनू झा की आँखों में चमक आ गई और वे निश्चिंत हो गए।

दूसरे दिन दोनों दरबार में उपस्थित हुए। गोनू झा ने जेब से कुछ आतिशबाजी निकालकर छोड़ी।

सभासद झुँझला गए। महाराज की भी आँखें लाल-पीली हो गईं और कहा, "गोनू झा, यह क्या बेवक्त की शहनाई बजा दी। सभा का सामान्य शिष्टाचार भी भूल गए?"

गोनू झा ने वातावरण को सहज करते हुए कहा, "महाराज, सर्वप्रथम धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन यह मेरी मजबूरी थी । इसी में व्यापारी भाई के रहस्यमय प्रश्न का उत्तर है। इसमें ही बिना जड़ के भाँति-भाँति के रंगों में फूल खिलते हैं।"

व्यापारी अवाक् रह गया । उसने सहमते हुए कहा, "महाराज, इन्होंने मेरे गूढ़ प्रश्न का उत्तर दे दिया।"

फिर उसने विस्मयपूर्वक गोनू झा से पूछा, "आपने कैसे जाना कि इसमें आतिशबाजी ही है?"

गोनू झा ने सहजता से कहा, "व्यापारी, जब आपने यह कहा कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगते हैं और उनमें भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, तब तक तो मुझे संदेह रहा, परंतु मेरे पूछने पर यह कहा कि रात ही में आपकी यह फसल अच्छी लगती है, तब जरा भी संशय नहीं रहा कि इसमें आतिशबाजी छोड़ अन्य सामान होगा।"

व्यापारी मायूस हो गया। राजा ने कहा, "व्यापारी, आपको दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। आप यहाँ रहने के लिए स्वतंत्र हैं, पर अपना कमाल रात में दिखाकर लोगों का मनोरंजन कीजिएगा। अगर प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा तो पुरस्कार भी पाइएगा, पर अभी पुरस्कार के हकदार गोनू झा ही हैं।"

-वीरेन्द्र झा

आएँ सीखें गुलाब के फूल बनाना

गुलाब के फूल तो आप सबने देखे ही हैं। कई रंगों और कई आकार के सुन्दर गुलाब किसे अच्छे नहीं लगते? इस बार हम यहाँ गुलाब के फूल बनाने के बारे में बता रहे हैं। इसके लिए रंगीन कागज़, परकार, पेंसिल, गोंद, कैंची, थोड़ा पतला और थोड़ा मोटा तार, आलपिन इत्यादि का जुगाड़ कर लीजिए।

1. सबसे पहले कागज़ पर एक गोला बनाकर उसे काट लीजिए। अलग-अलग आकार के ऐसे तीन-चार गोले काट लें।

जैसे-एक ढाई इंच व्यास का, दूसरा दो इंच व्यास का, तीसरा डेढ़ इंच व्यास का और चौथा एक इंच व्यास का।

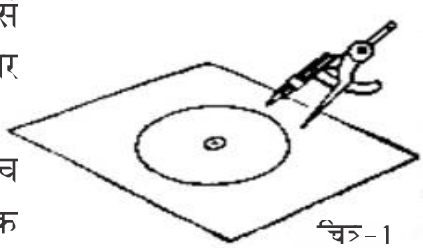

चित्र-1

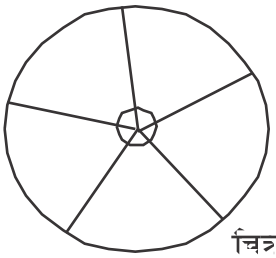

चित्र-2

2. काटे हुए गोलों को पेंसिल से पाँच बराबर भागों में बाँट लें।

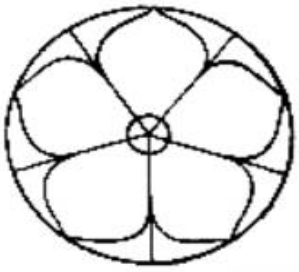

चित्र-3

3. अब चित्र तीन की तरह गोले पर पँखुड़ियों की डिज़ाइन बना लें। इसी तरह सभी गोलों पर डिज़ाइन बना लें।

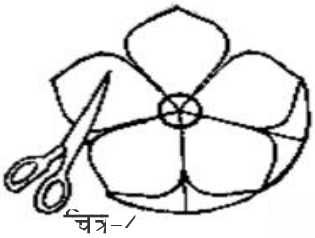

चित्र-4

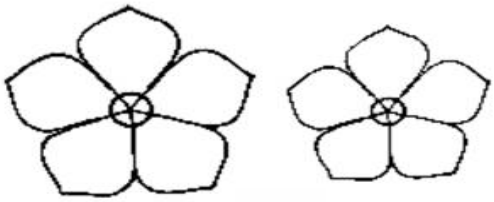

4. इन गोलों में से पँखुड़ियों के ऊपर का हिस्सा काटकर अलग कर दें। इस बात का ध्यान रखें कि बीच के छोटे गोले से थोड़ी दूर तक पँखुड़ियाँ जुड़ी रहनी चाहिए।

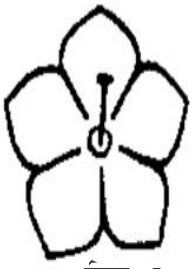

चित्र–5

5. इसी तरह से सभी पँखुड़ियों को काट लें। फिर सभी अलग-अलग आकार की पँखुड़ियों को एक के ऊपर एक रख लें। सबसे छोटी पँखुड़ी सबसे ऊपर और सबसे बड़ी सबसे नीचे रखें। बीच वाले छोटे गोले में एक तार का टुकड़ा या आलपिन पिरो लें।

6. इस तरह फूल तो बन जाएगा अब बनाना है पत्तियाँ। चित्र–6 में दिखाई गई पत्तियों की डिज़ाइन की तरह पत्तियाँ कागज़ से काट लें।

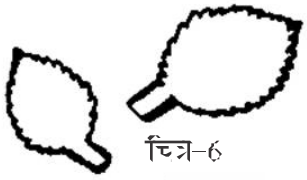

चित्र–6

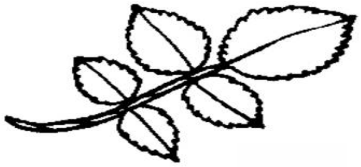

चित्र–7

7. पाँच-पाँच पत्तियों को एक तार में चिपका लें।

8. फूल तो पहले बना ही लिया था। फूल के बीचोंबीच जो तार पिरोया था उसे एक थोड़े मोटे तार के साथ लपेटकर अच्छे से कस दें। फिर इसी तार से पत्तियों को भी लपेट दें। अंत में इस तार पर हरे रंग का कागज़ गोंद लगाकर चिपका दें।

चित्र–8

आपकी कल्पना

गोनू झा ने आतिशबाज़ी को पेड़ कहा है। आप इनको क्या कह सकते हैं:

उदाहरण– तारों का फूल

- काले बादलों को ....
- सूरज को ....
- तेज चलने वाले आदमी को ....
- धीमे चलने वाले आदमी को ....

किस्से कहानियाँ

1. गोनू झा की चतुराई भरी कहानी आपने पढ़ी। आप बीरबल, तेनालीराम के चतुराई भरे किस्से पढ़िए और अपने वर्ग में सुनाइए।

2. 'बिना जड़ का पेड़' कहानी को अपने शब्दों में सुनाइए।